140
580 P
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1263/10/71

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 580

2/1911

891.431
D969 N

नागों की रानी

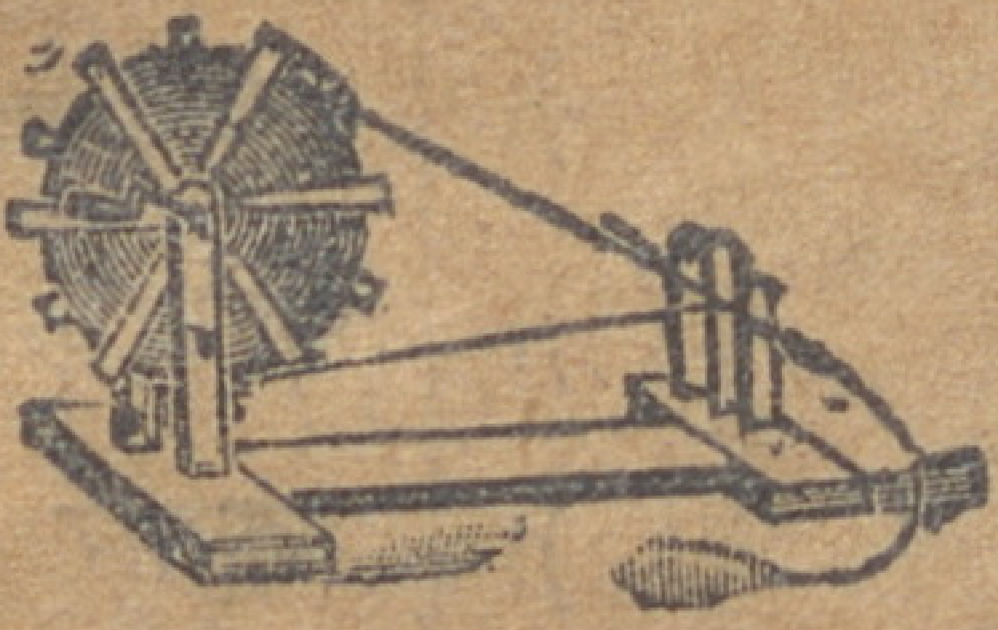

लेखक :—

पं० नाथूराम द्विवेदी 'शंख'

प्रकाशक :—

रामस्वरूप शर्मा स्वाधीन
भगवान पुस्तकालय,
शतरंजी मुहाल, कानपुर।

प्रथम वार ५०००) (सन् १९३९ ई०

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 580
Date 14/12/71
GOVT. OF INDIA

35

सस्ते मूल्य में पढ़ने योग्य उत्तम पुस्तकें।

पुस्तकें बेचने वालों के लिये ख़ास रिआयत।

ईश्वर प्रार्थना भजन	)॥	सम्राट पंचम जार्ज	।=)
हनुमान चालीसा	)।	अपराजिता	-)॥
गंगा स्तुति	)।	प्रताप-यश-दर्पण	।)
पहाड़ा	)।	काव्य निकुञ्ज	।)
बाग़ी की बेटी मैना	)।	उद्गार	।)
लाठी तलवार	)॥	बालपोथी	-)
फागुन बहार	)॥	बाल-प्रार्थना	।)
प्रेम-तरंग (उपन्यास)	।)	राममोहनराय	-)॥
संगम (उपन्यास)	=)	कथाकहानी	।)
बालकथा	॥)	आओ हँसें	।)
सदाचार प्रश्नोत्तरी	)॥	मनुष्य-कर्तव्य का परिचय	-)
शिशुशिक्षा	-)	तम्बाकू विष है	)॥
रामदास	=)॥	संसार विजयी	≡)
सुमन संचय	।-)	हज़रत मोहम्मद	।)
मन की मौज	॥)	जीवनधारा	॥।)

इन पुस्तकों के अतिरिक्त और भी पुस्तकें बेचने और पढ़ने वालों के लिये सस्ती कीमत पर मिल सक्ती हैं।

भगवान पुस्तकालय, शतरञ्जी मुहाल, कानपुर।

नागों की रानी

नागों की रानी तपस्विनी क्रान्ति-बीज की बोने वाली।
झेल जेल के कष्ट विपुल से हँस-हँस कुरबाँ होने वाली॥
सूबा आसाम पूर्व में है वह वहीं दूर हां रहती थी।
बैठी अपने लोगों में वह नित वीर कथाएँ कहती थी॥
स्वतंत्रता की वीर रूपिणी कोमल तन वह छोटी रानी।
बनी देवि थी हृदय-हृदय की थी उसकी दुनियां दीवानी॥
भाव हृदय में यही उमड़ता कैसे काट फेंक दूँ बंधन।
पराधीनता बुरी नष्ट हो मिटे देश का सारा क्रन्दन॥
धधक रहीथी उसके हियमें युद्ध-क्रान्ति की भीषण ज्वाला
स्वर्ग लोक से पीकर आई महा प्रलय की तीखी हाला॥
मरण-नाश बस सूझ रहा था अच्छा था हाहाकार उसे।
चूम रहा था पलपल चलचल मोहक महान-संहार उसे॥

बैठी एक ओर वह रानी भविष्य पर थी विचार करती।
घूम-घूम कर इधर-उधर वह स्वजाति में थी प्रचार करती॥
अपनी पिछड़ी हुई जाति में वह जागृति-मंत्र फूकती जाती।
बनी कोकिला मधुर प्रात की बन बन बीच कूकती जाती॥
सभी ग़दर की वे स्मृतियां धुँधली होती जाती थीं लय।
बंगाली वीरों के दिल में तब क्रान्ति ले उठी थी संजय॥
इन्क़िलाब के नारे उठ कर वज्रनिनादित होते आए।
संज्ञापन से कायरता के क्षीण भाव सब खोते आए॥
तब तक जलियांवाले में वे डायर ने वीर भूँज डाले।
हो उठे सकल ही भाग लाल जो पड़े धूसरित थे काले॥
क्रान्ति लहर तब उठी अनोखी उठ पड़े सुवीर देश वाले।
जीने मरने को सम करके आए रण में मरने वाले॥
यू०पी०का गौरव जाग पड़ा धधकी वीरों की हृदय आग।
चण्डी का क्रोध बन उठा था नारीजन का मोहक-सुभाग॥
सुनने को मिलने लगा एक फिर वही शब्द मधु 'इन्किलाब।
'चल मर जाएं' रण में मरने वालों को होता है शबाब॥'
गुजरात काठियावाड़ जगा मिट गया देश भर का ख़ुमार।
बम्बई और कर्नाटक से भी उठी युद्ध की मृदु पुकार॥

छेड़ी विहारियों ने स्व-तान रण-मंत्र फुक गए पड़ी जान ।
उठ पड़ी फ्रान्टियर की सारी लड़ने की महान आन-शान ॥
जिन्हें समझते थे हम कायर जिनको तब क्लीब बताते थे ।
जिनके दर्शन में भी सुवीर अपना अपमान जनाते थे ॥
कहते थे यह बंगाली हैं, बाबूजी हैं, आवेश नहीं ।
मरने मिटने के वीर भाव इनमें हैं मुतलक शेष नहीं ॥
सुनी वहीं से पहले हमने हां इन्किलाब की रार यहां ।
देखा आंखों से भी होता था भीषण नर संहार वहां ॥
रण के बांकुड़े स्वतंत्रता के आए मतवाले वक्ष खोल ।
चिर जिए क्रांति भारत माता होवे स्वतंत्र जयकार बोल ॥
पड़ गए जेल चढ़ गए दार हँसते-हँसते निज प्राण दिये ।
खाए वक्षस पर थे गोली मरने का थे अभिमान किए ॥
खुल गईं जगत भर की आंखें थर्रा उन से सरकार उठी ।
कलकत्ते से दिल्ली को देखा ले अपना सकल विचार उठी ॥
ललकार तिलक जी मार उठे श्रीकृष्ण वर्म हुंकार उठे ।
उलट-पलट करदें जगती को हरदयाल के सुविचार उठे ॥
गांधी ने राय सुझाई नव लालाजी कितनी मार सहे ।
चितरंजनदास सभी कुछ दे भारत से निजआभार कहे ॥

दीवाने हुए मुहम्मद जी श्री अबुलकलाम आज़ाद बड़े।
अब्दुल गफ़ार गांधी जी भी होने को थे बरबाद बड़े॥
विठ्ठल भाई पटेल ने सब अपना मां पर कुर्बान किया।
मोती के सदृश देश-भक्तों ने हँस-हँस कर सर्वस्व दिया॥
निजको, पत्नीको, प्रिय सुत को, कन्याओं-रिश्तेदारों को।
कमला सी पुत्र बधू प्रिय को धनके महान आधारों को॥
निज ठाटबाट सब आनबान अपना जीवन सारा विसार।
देदिया जवाहर जिसने निज कमला दी मां-पगपर निसार॥
वे शयन छोड़ मखमल गद्दे त्यागे कांटों के ताज लिए।
निकले लेकर अपने मुख में ढोंगे स्वराज्य आवाज़ लिए॥
माताका कण-कण फूल उठा नर नर के हिय में गान उठे।
सदियों के बंधन टूटेंगे अपने मन में अभिमान उठे॥
श्री गणेश ने अपना जीवन हँसते-हँसते ही वार दिया।
माता के चरणों में सारा रख अपना मीठा प्यार दिया॥
आज़ाद-भगत से बड़े बीर, बिस्मिल जैसे कुर्बान हुए।
श्री वीर कन्हाईलाल और सावरकर के अभिमान हुए॥
बीर जयति जय भारत मां की बोल रहे थे जोश भरे थे।
रण बांकुरे बीर आज़ादी को लड़ने को शूर खरे थे॥

उच्च हिमालय की सौधों में वीर गान आकर टकराया ।
महा क्रान्ति की लिए भावना तब सागर भी था लहराया ॥
रानी गुइदोली थी छोटी फिरती बन-बन में थी दीवानी ।
उसकी यह अपनेहै सम्मुख छोटीसी लघु अमिट कहानी ॥
आवाज़ क्रान्ति की मधुर उठा अपनें वीरों को ले आई ।
भारत-माता के चरणों पर सब कुछ अर्पण करने आई ॥
अभी बालिका थी गुइदोली बीत रहा खेलों में जीवन ।
कोमल आयुंवाल थी पावन, समझ न जिसमें आता बंधन ॥
तभी वीर बंगाली जन की उसने क्रान्ति-पुकार सुनी ।
भारत स्वतंत्र हो, की बोली, माता की जय-जयकार सुनी ॥
जलियां वाले का हाल सुना, वीरों का रुधिर विनाश हुआ ।
अपनी विहीनता का जो है कितना अनमिट इतिहास हुआ ॥
गर्जना तिलक की फिर सुनली, गांधी के शान्त विचार सुने ।
आतंक-वादियों के साहस पूरे उसने व्यापार सुने ॥
वह देहाती बाला केवल ग्रामों में थी निवास करती ।
क्रीड़ा उसकी प्रकृति बन गई, साथ उसी के विलास करतो ॥
उसने उद्यान चाय के वे, देखे होते दुष्कार्य सभी ।
अंग्रेजी अत्याचारों को अपनी सुहीन व्यापार सभी ॥

नर्क सदृश उन मज़दूरों का देखा उसने था जीवन।
बेइज़्ज़ती सभी देखी थी, देखा था सकरुण क्रन्दन॥
दुखी होगई थी वह बाला, उसका उर तब ललकार उठा।
स्वदेश पर मरने मिटने का तब उसके हृदय विचार उठा॥
वह करुणामय हुई बिचारी पीर समाई थी उर में।
निकला संगीत व्यथा का था पीड़ाएँ भर आईं स्वर में॥
कोकिल के मीठे गाने में, उत्सों के कलमल में हलमल में।
मलयानिल के सर सर स्वर में सरिता के लहरों के चंपल में॥
फूलों में सुन्दरि बेलों में और सुघर हरियाली में।
सूर्य चन्द्र में मधु प्रकाश में फैली रजनी काली में॥
उसे कथाएँ दी दिखलाती यह करुणा मय संसार बना।
पीड़ा मय दो दिन के जीवन का सारा ही व्यापार बना॥
दिया सुझाई क्रान्ति मार्ग तब नाश प्रलय उसको भाया।
दूर हो चली धूमिल होकर तब सुसृष्टि की सब छाया॥
जवां मर्द दीवानों को तब वह वीरा ललकार उठी।
कली विकसने के पहिले ही लेकर महान संहार उठी॥
आज़ादी के असंख्य मोती पीछे पीछे चल दिए अरे।
अनुशासन में बँध कर सारे लेकर मरने का भाव खरे॥

एक साथ जयकार बोलकर बहुत वीर सम्मुख आए।
उर में मधु अरमान भरे से क्रान्तिगान से इठलाए॥
वीरों का चयन किया बोली वीरों ममता बिसार आओ।
आज़ादी मरने से मिलती, मरने का बढ़ विहार पाओ॥
करो विदेशी राज खत्म सब अपने बल से निज राज करो।
समय आगया है सोओ मत, लड़ने के सब साज करो॥
जात फिरंगी जब तक वीरो नहीं भगाई जाएगी।
नहीं तब तलक प्रजा देश की सुख थोड़ा भी पाएगी॥
किन्तु सभी यह शांति पूर्वक, है हो सक्ता संदेह नहीं।
प्राणों से इसीलिए किंचित तुम अरे लगाओ नेह नहीं॥
उसकी सुन वीरता-पूर्ण बातें जन-जन में गौरव छाया।
मरने का एक मरणप्रण ले, नवयुवक हृदय था बढ़ आया॥
क्रान्ति घोषणा उसने करदी, था नहीं शान्ति का नाम लिया।
जुटी काम में, नहीं तनिक भी था फिर उसने अभिमान किया॥
था छिड़ा युद्ध आज़ादी का छेड़ा स्वदेश ने क्रान्ति गान।
जागरण होगया, जन-जन का, जग गए सभी में स्वाभिमान॥
मच गई देश में थी हलचल, उसकी नेता लघुरानी थी।
लक्ष्मीबाई अवतार रूप मानों आई दीवानी थी॥

अँगरेज़ हिल गए थे उससे, थर्रा सारी सरकार उठी।
जब वह रण प्रांगण में आई निज अरियों को ललकार उठी॥
समझी सरकार नाश आया विध्वंस न अब बच सकता है।
ऐसा क्रान्ति जीव पल में ही जाने क्या रच सकता है॥
याद लक्ष्मी की थी उसको झांसी की जो रानी थी।
अपने स्वदेश के लिए गई जो छोड़ सुअमिट कहानी थी॥
बस तुरत फ़िकर यह हुई प्रथम गुइदोली भी पकड़ी जाए।
हथकड़ी बेड़ियों के भीतर वह सिंहिनि है जकड़ी जाए॥
डाल जेल में नर्कग़ार में, सड़े, न स्वच्छ हवा पाए।
यही देशभक्तों ने थे भेंट कार्य की निज पाए॥
हुकुम पुलिस को हुआ पकड़ लो, बन्द करो कुछ हो न सके।
कहीं नाश का बीज जनों में हो ग़फ़लत वह बो न सके॥
पुलिस पकड़ने को सचेत थी, कब सिंहिनी पकड़ पाए।
डाल जेल में दे बाला को, मन माना इनाम पाए॥
पुलिस रात दिन लगी घूमने उसका पता लगाती थी।
किन्तु न हिम्मत कुछ पड़ती थी, जब उसको पाजाती थी॥
रही बचाती पहले निज को आख़िर पकड़ ली गई थी।
जेल कोठरी महा अँधेरी उसके लिए दी गई थी॥

वह नर्क सदृश यह जेल कष्ट, देखे वह कार्य स्व-मनमाने।
मन बहलावे को केवल थीं, हथकड़ियों की वे मधु तानें॥
उसका वह सकल स्वर्ग छूटा, छूटा मीठा-सा वह मधुवन।
वे बाग़-बगीचे ग्राम छटा पर्वती-मनोहर-सा जीवन॥
छूट गए वे संगी साथी, छूट गई कोमल आशा।
वह बन गई बंदिनी चिरकी मिटी सफ़लता की भाषा॥
आशाओं का ख़ून हो गया तोड़ न पाई वह बंधन।
अपने पीछे छोड़ गई वह निर्धन जन का दुख क्रन्दन॥
जेल गई गुइदोली हँसते कर्तव्य सभी अपने पाले।
हो गए हीन पथदर्शक से आज़ादी के वे मतवाले॥
उनकी अधीरता विपुल बढ़ा बढ़ असंतोष उनमें आया।
रण बीरों को रण में तब था बढ़ कर लड़ना बढ़ना भाया॥
उसके ही पीछे चले गए, लाखों जेलों में दीवाने।
बन गए मातृभू-शिख के वे मृदुशलभ खुशी से मस्ताने॥
क्रान्ति लहर उठ पड़ी विपुलसी महा क्रान्ति बोली अँगड़ाई।
प्रलय बरसने घोर घटा तब उस लघु जनपद में आई॥
हिंसा और अहिंसा में था उनका समान विश्वास रहा।
जीवन के कण कण में उनको था वज्र सदृश आभास रहा॥

दहल उठी सरकार उन्हें लख महानाश देखा आता।
और देश का राज्य देश के जनमें हो जैसे जाता॥
घोर दमन हो गए शुरू वे पकड़ जेल भर दिए गए।
मार मार कर सुनन भू गिरा बेइज़्जत थे किए गए॥
कोड़े लगे चढ़े फांसी पर सब अपना घरबार दिया।
किन्तु सदा ही अपने मुख से मां का जय जय कार किया॥
वीर समझते थे रण में फिर प्राणों का है मोह बुरा।
मरो किन्तु हो शान मरण में है मानव उपदेश सदा॥
मृत्यु हुई ध्रुव फिर तो निश्चय इस जगती में मरना होगा।
फिर कैसा डर तुम्हें वीरवर मां को स्वतंत्र करना होगा॥
इधर मुक़दमा गुइदोली पर चला बंदिनी जेल पड़ी।
कठिन दण्ड की उसने देखी होती आज्ञा बड़ी कड़ी॥
डाल जेल दी गई सुनारी पड़ी जेल में वह अब भी।
मिला हमें प्रान्तिक स्वराज्य है भोग रही दुख वह तब भी॥
आज तलक वह पड़ी जेल में जेलों के दुख देख रही है।
उठे कहीं आवाज़ न इसकी हमको आशा आज कहीं है॥
उठ पड़ते यदि वीर देश के, महान क्रान्ति मचा देते।
क्षण में इन विदेशियों को वे इसका मज़ा चखा देते॥

हाय न देशी जान सके यह पड़े उन्हीं के हैं बंधन।
केवल उनमें ही होता है आज कठिन दुस्तर क्रन्दन॥
सकल विश्व के जन स्वतंत्र हैं, जीव सकल स्वाधीन रहे।
किन्तु हिन्द वाले ही केवल अब तो पर-आधीन रहे॥
पड़ी जेल में वह गुइदोली बहा रही अपने आंसू।
आज बन रही हैं अभिलाषा जीवन सपने में आंसू॥
फड़क रहीं हैं उसकी बाहें हृदय चैन दिखाता है।
लड़ना मरना समर भूमि में उस वीरा को आता है॥
गुइदोली तुम पड़ी रहो वां, देख रहे हैं हम कायर।
आज भर रहे हम भी सूखे डाल डाल आंसू सागर॥
एक प्रवाह बहेगा ऐसा सकल जगत बह आएगा।
तेरा अहो फिर मुझ से जग ऐसे सुन पाएगा॥

क्रान्ति-गान

उठ उठ भारत की वीर-बाल,
चमके तेरी नभ में कृपाण;
बन जाए वह भीषण कराल।
चण्डी की तू हुंकार बने,
रण का तू मीठा प्यार बने;
अपना मोहन संहार बने,
अपनी बोली ललकार बने।
भागे दुश्मन जग पड़ें वीर,
रह पाएँ उनकी क्या मज़ाल।
उठ भारत के गौरव महान,
तू छोड़ आग का क्रान्ति गान;
जल जाए जग हो ध्वस्त भ्रस्त,
आए फिर पूरब से बिहान।
उसकी लाली में डूब उठे,
प्राणों का मीठा स्वर विशाल।

अरे न डर डरने वालों में,
शान न कुछ भगने वालों में;
सदा क्रान्ति रहती आई है,
इन दीवानों से लालों में।
बढ़ कर अपना दिखला दे रे,
सोते मानव सुन्दर कमाल।

मुद्रक :— सिद्धगोपाल सुकुल, कृष्णा प्रेस, अन्नपूर्णा-मन्दिर के सामने
पटकापुर, कानपुर।

प्रण

हमें निशान उठाना होगा,
अति ऊँचा फहराना होगा।
जेल चलें फांसी पा जाएँ,
पड़ें बेंत या गोली खाएँ।
या फिर और दूसरी विध से,
अपना कमाल हम दिखलाएँ॥
किन्तु विदेशी शासन को अब,
हमको दूर भगाना होगा।
अरे ग़ुलाम एक भारत है,
दुखी बहुत है अति आरत है॥
उन्नति खोया पराधीनता,
में हो गया अति अवनत है।
लुटा खुंदा है लूट खूंद को,
उनको आज बचाना होगा॥

———:o:———